पिछड़े बालक और सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से वंचित बालक

CTET Exam Notes : Child Development and Pedagogy (CDP) in Hindi Medium

पिछड़े बालक (Slow Learner)

शिक्षा मनोविज्ञान की दृषिट से ऐसे बालक पिछड़े हुए कहलाते है जो अपनी आयु के अन्य साथियों के साथ समान गति से आगे नहीं बढ़ पाते। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि पिछड़े हुए बालक वे बालक हैं जो जो सीखना तो चाहते हैं लेकिन उनके सीखने की गति अपनी आयु के अन्य बालकों की तुलना में कम होती है जिसके कारण वे कक्षा एवं विदयालय की विभिन्न गतिविधियों में पिछड़ जाते हैं।
पिछड़े बालक का मन्दबुद्धि होना आवश्यक नहीं है। पिछड़ेपन के अनेक कारण हैं, जिनकी चर्चा हम आगे करेंगें। उन कारणों में से मन्दबुद्धि होना एक कारण हो सकता है। इसी स्थति को पिछड़ापन कहते हैं।

शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए बालक कठिन एवं लगातार प्रयत्न करते हैं, पढ़ते हैं, समझने की कोशिश करते हैं और उपलबिध् स्तर प्राप्त करने की कोशिश करते हैं लेकिन वे अपेक्षाकृत कम प्राप्त कर पाते हैं, क्योंकि उनके सीखने की गति औसत से कम होती है। शिक्षक उनको पढ़ा नहीं पाते हैं क्योंकि वे समझ नहीं पाते हैं। यहाँ तक कि शिक्षक उनको अपनी तरपफ से अच्छे से अच्छे तरीके से समझाने का प्रयत्न करे तब भी वे सोचते ही रहते हैं। उनके दिमाग औसत बालकों की तुलना में स्थिर हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए बालकों को निम्न प्रकार परिभाषित किया है।

सिरिक बर्ट के अनुसार 'पिछड़ा बालक वह है जो अपने विधालयी जीवन के मध्य में अर्थात लगभग 10 1/2 वर्ष की उम्र में अपनी कक्षा से नीचे का कार्य न कर सके, जो उसकी आयु के लिए सामान्य कार्य का है।

शौनेल के अनुसार 'पिछड़ा हुआ विधार्थी वह है जो अपनी आयु के अन्य विधार्थियों की तुलना में अत्याधिक शैक्षणिक दुर्बलता को प्रदर्शित करें।

टी.के.ए. मेनन के अनुसार:- 'भारतीय सिथति में पिछड़ा बालक वह है जो अपनी कक्षा की औसत आयु से एक से अधिक वर्ष बड़े हों।

www.tetsuccesskey.com

सिरिल बर्ट पिछड़ेपन को मापने का तरीका बताया है। उनके अनुसार, 'पिछड़ा बालक वह है

जिसकी शैक्षणिक लबिध् (Educational Quotient) 85 से कम हो।

पिछड़े बालकों की विशेषताएँ:-

पिछड़े बालकों की विशेषताएँ:-

www.tetsuccesskey.com

उपरोक्त परिभाषाओं के आधर पर हम ये कह सकते हैं कि पिछड़े बालकों की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है:-

- पिछड़े बालक की सीखने की गति धीमी होती है। वे सीख कर जल्दी भूल जाते हैं।
- पिछड़े बालक की मानसिक आयु अपने समकक्ष छात्रों से कम होती है।
- पिछड़े बालक की शैक्षिक उपलबिध् सामान्य या औसत से कम होती है।

www.tetsuccesskey.com

- उनमें प्राय: मौलिकता का अभाव होता है और वे नवीन समस्या पर विचार नहीं कर सकते है।
- पिछड़े बालक अपनी और अपने से नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ होते हैं।
- पिछड़े बालक सामान्य शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षा ग्रहण करने में विपफल रहते है।
- पिछड़े बालक का व्यवहार असमायोजित है। वह समाज से पृथक रहना चाहता है।
- पिछड़े बालक जीवन में निराशा का अनुभव करते है।

www.tetsuccesskey.com

- पिछड़े बालक की ध्यान केनिद्रत करने की क्षामता कम होती है और वे एक विषय पर ज्यादा देर तक ध्यान केनिद्रत नहीं रख पाते।

पिछड़े बालक की विशेष समस्याएँ

पिछड़े बालक की विशेष समस्याएँ

www.tetsuccesskey.com

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पिछड़े बालकों की कुछ विशेष समस्याएँ होती है जो निम्नलिखित हैं।

- क्योंकि पिछड़े बालक अधिकांशत: शारीरिक दृष्टि से सामान्य बालकों से समान लगते हैं। अत: अभिभावक और अध्यापक उनसे वही उम्मीद रखते है जैसी वे सामान्य बालकों से रखते है।
- जब वे उन उम्मीदों पर पूरा नहीं उतर पाते हैं उन्हें अभिभावकों और अध्यापको की तरफ से डाँट, पफटकार और सजा मिलती है। जिससे ऐसे बालकों की मनोवृत्ति स्कूल एवं शिक्षकों के प्रति नकारात्मक हो जाती है।

www.tetsuccesskey.com

- उनके सहपाठी कक्षा में उनका मजाक उड़ाते है। इसका परिणाम यह होता है कि इन बालकों में संवेगात्मक समस्याएँ और व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ पैदा हो जाती है।
- ऐसे बालकों की मूल आवश्यकताएँ जैसे प्यार, सामाजिक स्वीकृति, पहचान आदि पूरी नहीं हो पाती। जो इनकी पढ़ने लिखने और सीखने की प्रेरणा को बहुत ही कम कर देती है।
- ऐसे बालकों को चूंकि लगातार असपफलता ही असपफलता मिलती है, अत: इनमें आत्मविश्वास, मनोबल एवं आत्मनिर्भरता जैसा कोई गुण नहीं विकसित हो पाता है। फलस्वरूप ऐसे बालकों में सीखने की अभिरूचि लगभग समाप्त हो जाती है।

www.tetsuccesskey.com

- ऐसे बालक अधिक चिनितत और तनावग्रस्त रहते हैं। वे समझ नहीं पाते हैं कि उन्होंने क्या गलत कर दिया है। इसी तनाव और चिंता का असर उनकी शैक्षिक उपलबिध्यों पर भी पड़ता है।
- पिछड़े बालकों की एक अन्य बड़ी समस्या कक्षा में समायोजन की होती है। ऐसे बालकों को कक्षा का पाठयक्रम बहुत कठिन लगता है। उनका इस पाठयक्रम को समझने में कठिनाई आती है और परिणामस्वरूप वे अन्य सहपाठियों की तुलना में पीछे रह जाते है।

www.tetsuccesskey.com

बालकों में पिछड़ेपन या शैक्षिक मन्दता के कारण:-

बालकों में पिछड़ेपन या शैक्षिक मन्दता के कारण:-

बालकों में सामान्य रूप से पिछड़ेपन या शैक्षिक मन्दता के निम्नलिखित कारण माने जाते है:

- शारीरिक कारण:-शारीरिक दोष जैसे शारीरिक निर्बलता, कम सुनना, तुतलाना, हकलाना, कम दिखाई देना आदि के कारण भी बालक शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं। अपने शारीरिक दोष के कारण ऐसे बालकों में शिक्षा के प्रति अभिरूचि कम होती है।

- मानसिक कारण:-पिछड़ेपन का बुद्धि लबिध् (I.Q) से भी सम्बन्ध् है। बर्ट (BURT 1973) द्वारा किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है कि बालकों के पिछड़ेपन का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण उम्र के अनुसार बौद्धिक क्षमता का कम या बिल्कुल ही न होना होता है। बौद्धिक क्षमता के अभाव में वे सामान्य या औसत बुद्धि के बालकों के लिए बनाए गए पाठयक्रम को समझ नहीं पाते हैं और परिणामस्वरूप पिछड़ जाते हैं। बर्ट ने अपने अधययन में पाया कि कुल पिछड़े बालकों में से 95% बालकों की बुद्धि उस आयु की औसत बुद्धि से कम थी। अत: स्पष्ट है कि मानसिक कारण बालकों में पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण है।

- शारीरिक रोग कुछ बालकों में गरीबी के कारण, अस्वस्थ वातावरण आदि के कारण बहुत से शारीरिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनके कारण बालक की शारीरिक व मानसिक शकित क्षीण हो जाती हैं जिससे वे थोड़ा सा कार्य करते ही शारीरिक या मानसिक थकान अनुभव करते हैं और कभी-कभी विधालय भी नहीं जाते। इन सब कारणों से भी बालक शैक्षिक क्षेत्रा में लगातार पिछड़ते जाते हैं।

- विधालय का वातावरण:-कुछ विधालय ऐसे होते हैं जहाँ सही अर्थ में अध्यन अद्ध्यापन करने का कोई शैक्षिक माहौल नहीं होता। शिक्षक छात्रों के साथ दुव्र्यवहार करते हैं और विधार्थी एवं शिक्षक के सम्बन्ध् सत्तामूलक होते हैं। इसके साथ विधालय और कक्षा में अनुशासनहीनता, विधालय में प्रेरणा की कमी, अयोग्य अध्यापको की नियुकित, अध्यापको का विधार्थियों के प्रति पक्षपातपूर्ण रवैया, दोषपूर्ण शिक्षण विधि तथा शैक्षणिक निर्देशन की कमी भी बालकों के पिछड़ेपन के लिए कहीं न कहीं उत्तरदायी होती है। विदयालय में मौजूद इस तरह के वातावरण का बालक के मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिसके कारण बालक शिक्षायी गतिविधियों में लगातार पिछड़ते जाते हैं।

- पारिवारिक कारण: यदि बालक का घरेलू वातावरण शिक्षा की दृष्टि से उत्साहवर्धक नहीं होता है, तो बालक की शैक्षिक आयु, वास्तविक आयु के अनुकूल नहीं बढ़ पाती है और बालक शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं। प्राय: देखा गया है कि परिवार की निर्धनता के कारण बालकों को पर्याप्त रूप से पौष्टिक भोजन नहीं मिल पाता है। विषम आर्थिक परिस्थिति वाले परिवार उनकी शिक्षा के लिए उत्तम सुविधएँ और पठन-पाठन सामग्री के लिए पर्याप्त धन मुहैया नहीं करा पाते हैं। उनको कभी-कभी रोजी रोटी कमाने के लिए परिवार की मदद भी करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त घर में पढ़ने के लिए अनुकूल माहौल का अभाव, परिवार के आपसी झगड़े, तथा माता-पिता की अशिक्षा भी बालकों के पिछड़ेपन के लिए कारण बन जाती हैं।

- कक्षा में अनुपस्थिति-बालकों के पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण कक्षा से लगातार अनुपस्थित होना भी है। ऐसे विधार्थी जो कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित नहीं होते हैं, उन्हें पाठयक्रम ठीक तरीके से समझ में नहीं आ पाता है जिससे उनकी शैक्षिक अभिरूचि लगातार घटती चली जाती है और वे कक्षा में लगातार पिछड़ते चले जाते हैं।

- स्वभाव सम्बन्धी दोष-पिछड़ेपन का एक अन्य कारण स्वभाव संबन्धी दोष भी हो सकता है। कुछ विधार्थी जल्दी गुस्से में आ जाने वाले या आक्रामक या पिफर बहुत ज्यादा भावुक होते हैं। ऐसे विधार्थियों को शिक्षकों के साथ और अपने सहपाठियों के साथ समायोजन करने में परेशानी आती हैं, और पफलत: वे कक्षा में पिछड़ जाते हैं।

- सामाजिक और सांस्कृतिक कारण-माता-पिता का व्यवसाय बच्चों का विधालय के प्रति दृष्टिकोण को निर्धरित करता है। बालक का सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश, शिक्षा संबधी लोकोचार को निर्धरित करता है। कक्षा में व्याप्त सामाजिक-सांस्कृतिक असमानता, जातिगत विषमता भी बालक को शिक्षायी विमर्श में लगातार पिछड़ने पर विवश करती है। विभिन्न धर्मों एवं संप्रदायों में शिक्षा को लेकर व्याप्त नकारात्मक विश्वास भी बालक की शिक्षा पर प्रभाव डालते हैं।

अवश्य पढ़े: विशिष्ट बालक - प्रतिभाशाली बालक और सृजनात्मकता

पिछड़ेपन या मन्दता निवारण के उपाय

पिछड़ेपन या मन्दता निवारण के उपाय

www.tetsuccesskey.com

उपरोक्त वर्णन से यह बात स्पष्ट होती है कि विधार्थियों में शैक्षिक पिछड़ेपन के लिए पूर्णतया कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हैं बलिक इसके लिए एक से अधिक कारण विधमान हैं जो छात्रा विशेष की परिसिथतियों पर निर्भर करते हैं। अत: पिछड़ेपन का उपचार तभी किया जा सकता है जब उसका विशेष अध्ययन करके उसके पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाया जाए। शैक्षिक पिछड़ेपन या मन्दता निवारण के लिए कुछ उपचार या उपाय निम्न हैं:-

- विधार्थियों के लिए उनकी योग्यताओं के अनुकूल पाठयक्रम बनाया जाए।

www.tetsuccesskey.com

- विधार्थियों में पाए जाने वाले शारीरिक एवं मानसिक दोषों और रोगों का उपचार एवं उससे
- सम्बन्धी परामर्श समय पर दिया जाए।
- ऐसे विधार्थियों से जो विषम आर्थिक परिसिथति वाले परिवारों से हैं, उन्हें नि:शुल्क शिक्षा और छात्रावृत्तियाँ प्रदान करने की व्यवस्था की जाए।
- विधार्थियों के लिए नि:शुल्क शैक्षिक निर्देशन का प्रबन्ध् किया जाए।

www.tetsuccesskey.com

- विधार्थियों के अभिभावकों को भी साक्षर बनाने के लिए कार्यक्रम शुरू किए जाए।
- शिक्षकों की नियुकित में गुणवत्ता का èयान रखा जाए।
- विधार्थियों के स्वभाव सम्बन्धी दोषों के निवारण के लिए समय-समय पर मनोवैज्ञानिकों द्वारा निर्देशन दिलवाया जाए।
- विधालय का वातावरण बाल केंद्रित, आनन्ददायी शिक्षण हेतु अनुकूल बनाया जाए।

पिछड़े बालक की शिक्षा

पिछड़े बालक की शिक्षा

www.tetsuccesskey.com

अभी तक के वर्णन से यह स्पष्ट है कि बालकों में शैक्षिक पिछड़ापन एक गम्भीर समस्या है और इस समस्या के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं है बलिक अनेक कारण हैं। उनमें से कुछ मुख्य कारणों का वर्णन यहाँ किया जा चुका है। यहाँ यह बात भी स्पष्ट है कि यदि हम चाहते हैं कि ऐसे बालक शिक्षा प्राप्त करें तो हमें ऐसे बालकों के लिए न सिर्पफ शिक्षा का विशेष प्रबन्ध् करना होगा बलिक साथ ही

उनके विधालय और घर के वातावरण को भी उनकी जरूरतों के अनुकूल बनाना होगा। मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए विशेष उपायों का वर्णन किया है। इनमें से कुछ मुख्य उपायों का वर्णन निम्नलिखित है-

www.tetsuccesskey.com

पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाना-पिछड़े बालकों को शिक्षा प्रदान करने से पहले यह पता लगाना आवश्यक है कि उनके पिछड़ेपन का वास्तविक कारण क्या है? तभी हम उस बालक विशेष की उस समस्या का समाधन कर पाऐंगे और उसे शिक्षा दे पाऐंगे। पिछड़ेपन के कारणा का पता लगाने के लिए अभिरूचि परीक्षण, बुद्धि शिक्षण, उपलबिध् परीक्षण, उनकी शारीरिक क्षमताओं की जाँच करके तथा बालक के घर के वातावरण का अध्ययन करके पता लगा सकते हैं।

विशिष्ट विधालयों और कक्षाओं की स्थापना-आमतौर पर यह देखा जाता है कि यदि पिछड़े बालकों को सामान्य बालकों के साथ शिक्षा दी जाएगी तो वे पिछड़ जाते हैं और पफलस्वरूप वे अपने स्वयं के स्तर के बालकों से और अधिक पिछड़े हुए हो जाते हैं। विशिष्ट विधालयों में उनको अपनी कमियों का कम ज्ञान होगा और वे अपने समान बालकों के समूह में अधिक सुरक्षा का अनुभव करेंगे। इन विधालयों में उनके लिए प्रतिद्वनिद्वता कम होगी और प्रोत्साहन अधिक होगा। अत: पिछड़े बालकों के लिए विशिष्ट विधालयों की स्थापना होनी चाहिए। इन विधालयों में कक्षा में छात्रों की संख्या भी कम (लगभग 15) रखी जानी चाहिए ताकि शिक्षक सभी छात्रों पर पूरा ध्यान दे सके। लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिक इस सुझाव का समर्थन नहीं करते हैं। उनका मानना है कि पछिड़े बालकों को सामान्य बालकों से अलग करना ही उनको उनके पिछड़ेपन का अहसास कराएगा और साथ ही ऐसे बालक सामान्य बालकों से कुछ सीखने का मौका भी गंवा देंगे।

www.tetsuccesskey.com

अभिभावकों, शिक्षकों एवं समुदाय का उत्तदायित्व

अभिभावकों, शिक्षकों एवं समुदाय का उत्तदायित्व

www.tetsuccesskey.com

पिछड़े हुए बालकों का समय रहते ही पता लगाने में शिक्षक और अभिभावक बहुत-अधिक मदद कर सकते हैं। अगर अभिभावक और अèयापक बच्चों के व्यवहार पर विशेष èयान रखें तो बच्चों के विकास के विभिन्न आयामों में देरी, भाषा के इस्तेमाल और शब्दकोष में कमी का आसानी से पता लगाया जा सकता है।

- अध्यापको को विशेष रूप से ऐसे बालकों का अवलोकन करना चाहिए और उन्हें किसी परामर्शक या मनोवैज्ञानिक के पास विशेष राय के लिए भेजना चाहिए।
- छात्रो के किसी विशेष व्यवहार, घटना, सत्य या बोलने के तरीके के संचयी और कथा सम्बन्धी रिकार्ड का लिखित वर्णन स्कूल में रखा जाना चाहिए।

www.tetsuccesskey.com

- अध्यापको और अभिभावकों को ऐसे विधार्थियों की परेशानियों के प्रति सजग एवं गंभीर होना चाहिए और ऐसे विधार्थियों को डाँट, पफटकार की बजाए ज्यादा संजीदा एवं जाहिर करना चाहिए। ऐसे बच्चों को शारीरिक दण्ड कभी नहीं दिया जाना चाहिए।
- पिछड़े बालकों के अभिभावकों को इस बात को अवगत कराने में कि उनके बच्चे कम मानसिक योग्यता वाले हैं, अध्यापको की विशेष भूमिका है।

www.tetsuccesskey.com

- कक्षा की सामान्य कार्यवाही में कम मानसिक स्तर वाले बच्चों के लिए भी विशेष प्रावधन होने चाहिए।
- ऐसे बच्चे सामान्यत: उच्चतर शिक्षा तक नहीं पहुँच पाते हैं, अत: विधालय उनको ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम प्रदान करे जिससे वे अर्थपूर्ण जीवन जी सकें और सामाजिक रूप से सक्षम बन सकें।
- अभिभावकों और अध्यापको को चाहिए कि ऐसे बच्चों की पढ़ाई के दौरान व्यवधन को कम करें और उन्हें पढ़ाई के लिए एक शांत और अनुकूल माहौल प्रदान करें।
- पिछड़े बालकों की पढ़ाई के दौरान बार-बार प्रशंसा और पुनर्बलन का प्रयोग करें। पाठ को छोटा बनाएँ। ज्यादा देर तक लगातार पढ़ने की बजाए कई बार कम समय के लिए पढ़ाना ज्यादा लाभदायक होगा।

www.tetsuccesskey.com

- पढ़ाई को रोचक और आरामदायक बनाएँ। अभिभावकों और अध्यापको का सकारात्मक रवैया आवश्यक है। बाल-केंद्रित शिक्षण एक बेहतर विकल्प है।
- अभिभावकों को चाहिए कि वे ऐसे बालकों से लगातार बातचीत करें। अभिभावक उनसे उस दिन की विधालय की गतिविधियों के बारे में पूछें मसलन उन गतिविधियों में उन्हें क्या अच्छा लगा और क्यों आदि। टी.वी. के कार्यक्रम, जिन्हें बच्चा देखता है के बारे में भी सवाल किए जा सकते हैं।

www.tetsuccesskey.com

- बच्चों में शिक्षा के प्रति लगाव तथा इसके महत्व को स्थापित किया जाना चाहिए।

सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से वंचित बालक

सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से वंचित बालक

सामाजिक-सांस्कृतिक परिसिथतियों का बालक के विकास पर सक्रिय एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है। बालक अपने सामाजिक और सांस्कृतिक गुणों के आधर पर ही एक बेहतर नागरिक बनता है। उपयुक्त सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश बालकों को बहुमुखी विकास एवं वैयत्तिफक उन्नति के अवसर प्रदान करता है। निर्देशित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इसके विपरीत सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिसिथतियाँ अनुकूल न होने पर बालक का विकास बाधित हो जाता है। बालक अपने जीवन मूल्यों को अपने समाज और संस्कृति से सीखता है।

विकास व्यत्तिफ की आनुवांशिक क्षमताओं और वातावरण के मध्य होने वाली अन्तक्रिरया का परिणाम होता है। बालक की आनुवांशिक क्षमताओं का विकास वातावरण में ही होता है, इसके अतिरिक्त स्वयं वातावरण भी बालक के विकास की दशा, दिशा, और गति निर्धरित करने में सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रत्येक बालक या व्यत्तिफ अपना विकास अपनी योग्यता, क्षमता और साध्न सम्पन्नता के अनुरूप करता है। यह योग्यता, क्षमता और साध् न सम्पन्नता प्रत्येक बालक में सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक- राजनैतिक-शैक्षिक संदभो± के कारण से विविध्ता लिए हुए होती है।

इस विविध्ता के परिणामस्वरूप यदि किसी बालक की योग्यता, क्षमता, साध्न एवं अवसरों की उपलब्ध्ता के प्रभावित होने से उसका विकास नहीं हो पाता है अर्थात वह पिछड़ जाता है तो ऐसे बालकों को वंचित बालकों की श्रेणी में रखा जाता है।

वंचना की यह परिघटना किसी जाति, लिंग, ध्म, समुदाय या स्थान तक सीमित न होकर सार्वभौमिक है। सामाजिक, आर्थिक प्रगति के बाद भी समाज में अभी भी ऐसे समुदाय, वर्ग विदयमान है जो किसी न किसी स्तर पर, वंचना झेल रहे हैं। विषमता में अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

अत: वे बालक, जिन्हें सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक-शैक्षिक सुविधओं का अभाव रहता है, उनका समुचित विकास नहीं हो पाता है। क्षमता एवं योग्यता होते हुए भी वातावरण एवं सुविधएँ न मिलने के कारण वे अपना विकास नहीं कर पाते। ऐसे बालक 'वंचित बालक कहे जाते हैं। यह वर्ग भी विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों की श्रेणी में आता है।

वंचना से अभिप्राय

वंचना से अभिप्राय

वंचना एक सामाजिक-आर्थिक संप्रत्यय है। यह व्यापक एवम परिसिथति सापेक्ष अवधरणा है। वंचन की अवधरणा असुविधओं एवं अभावों की ओर संकेत करती है। ये अभाव प्राय: सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिवारिक वंचनाओं से सम्बदध् होते हैं। अभावों एवं अपेक्षित सुविधएँ न मिलने के परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में बालक का सामान्य विकास बाधित होता है। शारीरिक-मानसिक एव चनात्मक क्षमताएँ रखते हुए विषमता एवं वंचना के कारण बालक का समुचित विकास नहीं हो पाता है। वंचन निम्नस्तरीय जीवन दशा या विलगाव की ओर संकेत करता है, जो कि व्यतिफ या समूह को उसके समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक उपलबिध्यों में भागीदार बनने से रोक देता है। अर्थात वंचन जीवन की उन)णात्मक दशा या उनका समुच्चय है जिनके कारण मानव की अपेक्षित क्षमताओं का विकास नहीं हो पाता है। वस्तुत: वंचन सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक परिवेश से जुड़े आवश्यक एवं अपेक्षित अनुभवों का अभाव है, जिसके पफलस्वरूप व्यतिफ या समूह का वांछित या आवश्यक विकास नहीं हो पाता है।

वंचन का क्षेत्र एवं प्रकृति-

वंचन का क्षेत्र एवं प्रकृति-

www.tetsuccesskey.com

वंचना एक व्यापक एवं परिसिथति सापेक्ष अवधरणा है, जो समाज में व्याप्त सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक विषमताओं एवं गैर-बराबरी की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। वंचना प्राय: व्यत्तिफ या समूह की ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक अवसिथति की प्रकृति एवं स्वरूप पर निर्भर करती है।

उदाहरण के लिए भारतीय समाज में महिला, दलित एवं आदिवासी, अल्पसंख्यक आदि अपने ऐतिहासिक-सामाजिक-आर्थिक संधर्भो से ही उपेक्षित एवं वंचना का शिकार रहे हैं। इनके वंचन की प्रकृति एवं स्वरूप, स्थान एवं समाज विशेष के सन्दर्भ में पर्याप्त विविध्ता लिए हुए रही है।

www.tetsuccesskey.com

वंचन के क्षेत्र

- **सामाजिक वंचन**
- **सांस्कृतिक वंचन**
- **आर्थिक वंचन**
- **राजनैतिक वंचन**

www.tetsuccesskey.com

- **शैक्षिक वंचन**
- **मनोवैज्ञानिक वंचन**
- **भौगोलिक वंचन**

वंचन के उपयर्ुक्त क्षेत्रों के अनुरूप ही वंचित बालकों की प्रकृति भी अलग-अलग होती है। यह आवश्यक नहीं कि बालक किसी एक क्षेत्रा में ही वंचना का शिकार हो। भारत जैसे बहु-सामाजिक, बहु-सांस्कृतिक समाज में विषमता एवं असमानता के कारण वंचना के सभी क्षेत्रों में एक सह-सम्बन्ध देखा गया है। ऐसे समाजों के बालक प्राय: बहुप्रकारीय वंचना को झेल रहे होते हैं। इस तरह की वंचना के परिणामस्वरूप बालक का सामान्य विकास अवरुद्ध हो जाता है।

www.tetsuccesskey.com

वंचित बालक शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक दृषिट से पिछड़ जाते हैं। कक्षा एवं विधालयी गतिविधियों से वे लगातार दूर होते जाते हैं। उनमें हीन भावना, निराशा, कुण्ठा, निर्णय क्षमता का अभाव, अपराध् बोध्, सांवेगिक असिथरता, पलायन करने की प्रवृत्ति आदि के लक्षण दृषिटगोचर होने लगते हैं। जिनका असर उनकी पढ़ाई पर होता है और परिणामत: वे स्कूल छोड़ देते हैं।

वंचित बालकों की पहचान एवं सहयोग-

वंचित बालकों की पहचान एवं सहयोग-

वंचित बालकों के समुचित विकास एवं उनके शैक्षिक उन्नयन हेतु समय रहते उनकी पहचान करना आवश्यक हो जाता है। वंचन सामान्यतया बालक का अपना व्यक्तिफगत कारण नहीं होता बलिक यह एक परिसिथतिजन्य, सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक कारण होता है। अत: इन्हीं संदभो में बालक की कमियों एवं उसके पिछड़ने के कारणों की पड़ताल की जानी चाहिए।

माता-पिता या परिवार के सदस्यों के सम्पर्क से भी उनकी पहचान करना संभव होता है। बालक के पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक परिवेश के विषय में विभिन्न साध्नों एवं माध्यमो से विस्तृत जानकारी एकत्रित करके एक शिक्षक ऐसे बालक की पहचान कर सकता है। एक बार पहचान हो जाने के पश्चात शिक्षक के लिए ऐसे बालक या बालकों के सम्बन्ध् में शिक्षा के लिए प्रयास करना आसान हो जाता है। ऐसे बालकों को अनूकूल वातावरण तथा समुचित सुविधएँ उपलब्ध् कराकर ही शिक्षा से उन्हें जोड़ा रखा जा सकता है। शिक्षक द्वारा दिया गया परामर्श एवं निर्देशन भी वंचित बालकों के लिए आवश्यक होता है। वंचित बालकों को उत्पे्ररित करने, उनके कौशलों का विकास करने में शिक्षक, अभिभावक एवं मित्रा समूह की भूमिका रचनात्मक एवं महत्त्वपूर्ण होती है।

परिवार, विधालय तथा समाज द्वारा वंचित बालकों को विशेष सुविधएँ एवं अवसर उपलब्ध् कराना चाहिए जिससे वे अपेक्षित व्यक्तिफगत विकास कर सामाजिक विकास में भागीदार बन सके।

<<< बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

नोट: आपको हमारी पोस्ट कैसी लगी? कृपया कमेंट करके ज़रूर बताए |

Saba Pasha

Saba Pasha is the founder and CEO of TET Success Key. She created one of the best site for exam preparation.Here you can find latest exam updates and free study material for your exam preparation.